RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 37 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 16 फरवरी 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य जरूरी है

डॉ.प्रहलाद सिंह मर्तोलिया से बातचीज

बला में रोड सर्वे के समय जुट गई भीड़

चलने वाली मशीन देखने बच्चे स्कूल और जंगल से लकड़ी लेने गई महिलाएं लौट आए

माइग्रेशन में शिक्षक भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर मेहनत करते थे

गिलमधार में विदाई का दृश्य बहुत मार्मिक होता था जब मिरासी भी होते

कार्यालय प्रतिनिधि

समाज में एक पीढ़ी ऐसी होती है जो अपने अतीत के योग में जुड़ती है और नई पीढ़ी को समझने की कोशिश करती है। जो इस समझ में कामयाब होता है वह भाग्यवान है, जो नहीं समझा वह उलझनों में उलझता चला जाता है। अपनी पम्पराओं के साथ नई पीढ़ी से तालमेल कर आगे बढ़ने वालों में डॉ. प्रहलाद सिंह मर्तोलिया से साथ आज की बातचीत है। डॉ. प्रहलाद सिंह कहते हैं- 'नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य जरूरी है। पुराने तौर-तरीकों में तासीर थी लेकिन नई पीढ़ी के बच्चों से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है।' प्रत्येक समाज की यही सच्चाई भी है क्योंकि जिस प्रकार का वर्तमान वातावरण है उसमें जन्मे बच्चे तुरन्त परिणाम चाहते हैं जबकि परिणाम के लिये साध और साधना जरूरी है। वह दौर भी था जब संसाधनों के अभाव में सड़क, बस, रेल, शहर देखना बहुत बड़ी बात मानी जाती थी।

बचपन की ऐसी ही रोचक बातों को याद करते हुए मर्तोलिया जी बताते हैं जब 'बला' में पहली बार रोड बन रही थी, पहले उसका सर्वे हुआ। पीडब्लुडी के इंजीनियर जीप से आने वाले थे और यह सूचना थल, तेजम, नाचनी से लेकर मुनस्यारी तक आग की तरह फैल गई। जिस दिन बला में सर्वे के लिये इंजीनियर साहब आए, बच्चे अपने स्कूलों से और लकड़ी चारा लेने जंगल गई महिलाएं 'जीप' देखने के लिये आ गए। पहली बार चलने वाली मशीन देखने बच्चे-बूढ़े जुटे। यह भी फैल चुकी थी जीप बहुत चलकर आई है थक चुकी। ऐसे में जानवर के लिये चारा ला रही एक महिला ने जीप के सामने घास का गट्ठर रख दिया। नई पीढ़ी जो सुविधाओं में है उसके लिये उन दिनों की बातें आश्चर्य की हैं, जिसे वे कहानी की तरह पढ़ते या सुनते हैं। कितनी कठिनाई के दिन हुआ करते थे जब साधन नहीं थे लेकिन आगे बढ़ने का हौसला बहुत था।

बात करें बला ग्राम की तो यहाँ रहने वाले मर्तोलिया परिवार जोहार के मर्तोली के हुए। मर्तोली में मोहन सिंह मर्तोलिया जी हुआ करते थे जिनके सुपुत्रों में विजय सिंह, चन्द्र सिंह, प्रताप सिंह

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

कश्मीर से भी जुड़ा है पिप्पलाद का रिश्ता

सूर्यकान्त बाली

किसी संस्कृत जानने वाले से पिप्पलाद का नाम पूछेंगे तो वह आपको उस महान ऋषि के बारे में दो सूचनाएँ जरूर दे देगा। एक कि पिप्लाद के नाम से अथर्ववेद की एक शाखा मिलती है जिनका नाम है पैपप्लाद शाखा और दूसरी यह कि एक बार कई सारे जिज्ञासु पिप्पलाद से अध्यात्म चर्चा करने आए थे और उनके बीच आपस में जो सम्वाद हुआ वह प्रश्नोपनिषद में हम जैसी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित लिखा पड़ा है। दोनों सूचनाएँ सही हैं। पर पिप्पलाद का जितना बड़ा नाम हमारे इतिहास में और हमारी स्मृतियों में है, उसे देखते हुए वे दोनों सूचनाएँ अपर्याप्त नजर आती हैं। पिप्पलाद का बड़ा व्यक्तित्व और उसके मुकाबले में सूचनाओं का नितान्त अभाव इन दोनों परस्पर विरोधी बातों का नतीजा यह हुआ है कि पिप्पलाद के बारे में कई तरह की चर्चाओं ने हमारी परम्परा में जन्म ले लिया है। चर्चाएँ कितनी ठीक हैं और कितनी गलत, इस बारे में फैसला करना कई बार इसलिए मुश्किल हो जाता है क्योंकि इतिहास ही इतना पुराना है। पिप्पलाद यानी आज से करीब चार सवा चार हजार साल पहले का इतिहास। पर चूँकि उन चर्चाओं का आपसी तालमेल बिठाने में काफ़भ मुश्किल आती है इस लिए उनके आधार पर कोई खाका बना पाना भी उतना ही मुश्किल हो जाता है। तो क्या था पिप्पलाद का बड़प्पन? क्या योगदान किया उन्होंने भारत की सभ्यता को? इन सवालों से जूझने से पहले क्यों ना एक नजर उनसे जुड़ी चर्चाओं पर डाल ली लाए?

पिप्पलाद कौन थे? इस सवाल के जवाब में जिस नाम के सन्दर्भ से हमें कुछ मदद मिल सकती थी उसी नाम के कारण धुंधलका थोड़ा बढ़ गया है। नाम है दधीचि जिनका वंशधर पिप्पलाद को माना जाता है। पर समस्या यह है कि पिप्पलाद का समय महाभारत से कई सदी बाद का है जब वेदों का यज्ञीय महत्व कम हो रहा था और अध्यात्म दर्शन तथा ब्रह्मविद्या का महत्व लगातार बढ़ रहा था। इसके विपरीत दधीचि एक ऐसा मिथकीय पात्र है जिनकी ऐतिहासिकता के बारे में इतमीनान से कुछ कह पाना आसान नहीं। दधीचि की ख्याति हमारी स्मृतियों में उस वज्र के कारण है जो उनकी हड्डियों से बना था और जिस वज्र की मदद से फिर इन्द्र ने असुरों का वध किया। जाहिर है कि घटना देवासुर संग्राम के दिनों की है जिसकी ऐतिहासिकता पर अभी पूरी शोध होना बाकी है और उन देवासुर संग्रामों में दधीचि की भूमिका क्या थी। जब मामला इतना पुराना और अनिश्चित हो तब अपेक्षाकृत कई हजार साल बाद के पिप्पलाद को कैसे उस दधीचि से जोड़ सकते हैं?

पर चूँकि जोड़ दिया गया है और पुरानी और नई स्मृतियों को पुराणों ने कई बार आपस में नमक और पानी की तरह मिला दिया है, इसलिए पुराणों ने दधीचि से जुड़ी कई दूसरी बातों को भी पिप्पलादसे जोड़ दिया है। मसलन जब दधीचि ने देहत्याग किया तो उनकी पत्नी प्रतिथेयी यानी पिप्पलाद की माँ गर्भवती थी। प्रतिथेयी दधीचि के साथ सती हो जाना चाहती थी। अत: उसने अपना गर्भ फाड़ा, बच्चे को निकाल पीपल (पिप्पल) के नीचे रखा और पति के साथ दाह हो गई। फिर चूँकि पिप्पल खा खाकर बच्चा बड़ा हुआ इसलिए बड़ा हो कर वह पिप्पलाद कहलाया। एक कहानी कामधेनु के साथ जुड़ी मिलती है। दधीचि की हड्डियों से इन्द्र के लिए वज्र बनाने में कामधेनु की भूमिका काफी मानी जाती है। कहानी यह बन गई कि जब दधीचि की देह छूटी तो कामधेनु ने उनके देहत्याग के स्थान पर अपने दूध की धारा छोड़ी। इससे इस जगह का नाम दुग्धेश्वर पड़ गया और कहानी है कि पिप्पलाद ने उसी दुग्धेश्वर नामक जगह पर तपस्या की थी वहाँ उन्हें कोलासुर ने तंग करना शुरू किया तो पिप्पलाद के पुत्र ने एक कृत्या का निर्माण कर कोलासुर का वध कर दिया और उस जगह का नाम पिप्पलाद तीर्थ पड़ गया। यह जगह नर्मदा के किनारे है।

क्या आप इन सभी कहानियों पर विश्वास कर सकते हैं? नहीं कर सकते ना? करेंगे तो इतिहास को कल्पना बना देने का वही अपराध आप भी करेंगे। जो अपराध पश्चिम विद्वानों ने कल्पना को इतिहास की तरह पेश कर हमारे साथ किया है और आर्य नामक एक झूठ को हमारे दिमागों में बिठा दिया है। पर कहानियों के आधार के बारे में हमें कुछ जरूर सोचना चाहिए कि आखिर किस आधार पर ये कहानियाँ बनी होंगी? दधीचि के साथ पिप्पलाद का रिश्ते का शिवपुराण, स्कन्दपुराण और पद्मपुराण में इस कदर बयान होने से यह निष्कर्ष तय है कि पिप्पलाद दधीचि नामक पिता के पुत्र थे जिन दधीचि को नाम की समानता के आधार पर पुराने दधीचि से जोड़ दिया गया और तमाम तरह की चर्चाएँ फैला दी गईं। नर्मदा किनारे पिप्पलाद तीर्थ होना एक ऐसी सशक्त परम्परा है जो नर्मदा से पिप्पलाद को

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

दिखलावट के दौर में पकड़ भी एकदम हो जाती है

बनावट-दिखलावट का ऐसा दौर भी आएगा, किसी ने सोचा नहीं था। एक दूसरे को रिझाने के लिये नृत्य-रंग, हास-विलास तो होते थे लेकिन खड़े-खड़े बेवकूफ बनाने जैसा खूब होने लगा है। अपने किये-धरे को दिखाने के लिये जिस प्रकार से प्रचारित करने का फैशन चल पड़ा है उससे साफ है कि हमारे अवचेतन और चेतन में यह समझ है कि सबकुछ दिखलावट हो रही है। फिर भी बनावट करने वालों को सफल माना जा रहा है। सरकारें अपने प्रचार के लिये पूरी ताकत लगाती हैं और जी-हजूरी के सहारे आगे बढ़ने वाले इसमें गले तक डूबे रहते हैं।

सरकार चाहे कोई भी हो वह अपनी प्राथमिकताओं और उद्देश्यों को आगे बढ़ाएगी। विभागीय कार्य भी अपने कार्यों को प्रसारित करेंगे। यह दिखावट नहीं बल्कि हकीकत है। लेकिन जिस प्रकार से शिष्टाचार भेंट के बहाने फोटो परोसने का दौर चल रहा है वह अति ही है। मान लिया गया है कि कुर्सी में बैठा नेता या अधिकारी तभी खुश होगा जब उसके पास जाने के लिये हार-उपहार ले जाया जाए, और जब ले ही जा रहे हो तो उसका लगे हाथ फोटो भी खींचकर प्रसारित हो। दिखावट के इस दौर में अपनी पहचान बनाने के लिये जिस प्रकार का सैलाब उमड़ रहा है उसे शिष्ट बताया जा रहा है। जबकि शिष्ट तो आपकी सादगी, सच्चाई, ईमानदारी, कर्मों के द्वारा दिखाई देगा।

दिखलावट की परत उतरती जरूरी है चाहे वह समय ले परन्तु दिखलावट के इस दौर में दिखावा करने वालों की पकड़ भी एकदम होने लगी है, इसलिये सावधान रहें। यह दौर चतुर लोगों का है लेकिन भले नेताओं और अधिकारियों की भी कमी नहीं है जो भली भाँति जानते हैं कि उन्हें रिझाने आने वालों का प्रयोजन क्या हो सकता है। दिखलावट के इस पूरे मायाजाल को समाज के हर किसी ने समय रहते समझना चाहिये, क्योंकि सन्तुलन और न्याय के लिये यह जरूरी है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

सुनेत्रा महाराष्ट्र की पहली महिला उपमु०

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के दिवंगत अध्यक्ष अजित पंवार की पत्नी सुनेत्रा पंवार महाराष्ट्र की पहली महिला उप मुख्यमंत्री बनीं। आचार्य देवव्रत ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

यूरोप के लिये दोगुना हो जाएगा निर्यात

नई दिल्ली। केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत और यूरोपीय संघ के बीच हुआ मुक्त व्यापार समझौता 5 वर्षों में यूरोप को होने वाले निर्यात को दोगुना कर देगा। उन्होंने इस ऐतिहासिक समझौते को 'मदर ऑफ ऑल डील्स' करार दिया।

आत्मसम्मान से समझौता किया : शरीफ

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा कि मित्र देशों से कर्ज मांगने के दौरान अपमानजनक स्थिति का सामना करना पड़ा है। कहा कि ऋण लेने की मजबूरी में पाकिस्तान को अपना सिर झुकाना पड़ा है। साथ ही आत्मसम्मान की कीमत पर समझौता करना पड़ा।

फर्जी ईमेल से सतर्क रहें

कैलीफोर्निया। गूगल ने हाल ही में जीमेल एड्रेस बदलने का एक नया फीचर प्रस्तुत किया है लेकिन स्कैमर इसका फायदा उठाकर लूट रहे हैं। ये जालसाज बिल्कुल असली दिखने वाले ईमेल भेजकर दावा करते हैं कि आपको 'जीमेल एड्रैस बदलना' या 'वेरिफाई' करना होगा। इसमें दिए गए लिंक नकली वेबसाइट पर ले जाते हैं और सारा डेटा स्कैमर के पास चला जाता है।

निपाह वायरस से न घबनाएं

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका ने भारत में जानलेवा निपाह वायरस के दो मामले सामने आने के बाद कहा है कि घबराने की जरूरत नहीं है। ओर देश के लिए फिलहाल कोई तात्कालिक खतरा नहीं है। स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि वह राष्ट्रीय रोग संस्थान के साथ मिलकर काम कर रहा है, जो स्थिति पर लगातार नजर रखे हुए है।

बैलेस्टेरास की तांबे की प्रतिमा के टुकड़े

मैड्रिड। स्पेन के दिग्गज गोल्फ खिलाड़ी सेवे बैलेस्टेरोस की उनके गृहनगर पेट्रेना से चोरी हुई तांबे की आदमकद प्रतिमा को पुलिस ने एक स्टोर से कई टुकड़ों में बरामद किया है। मामले में 22 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया गया है।

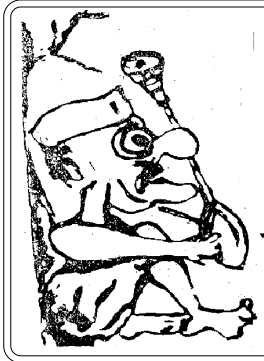

फसक

दाज्यू, इच्छाएं हमेशा हरी रहने वाली ठैरी

गाड़-गधेरे सब जगह होर्डिंग-बैनर का रिवाज चल पड़ा बल

दाज्यू, अपने बनरन बूबू 82 साल में मैराथन की बात कर रहे हैं। सुनकर गुदगुदी होने लगी और उनके लिये घी शहद का इन्तजाम कर लिया है। दाज्यू, इच्छाएं हमेशा हरी रहने वाली ठैरी। अब देखो कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत ने भी तो ऐलान कर डाला- 'दस साल तक रिटायर होने वाला नहीं हूँ।' उनके कहने भर से टिकट की आश लगाए बैठे मझले, युवा नेता कांप रहे हैं। महेश शर्मा ने मजाकिया लहजे में भगत से पूछ भी लिया- '78 साल की उम्र में क्या खा रहे हैं।' दाज्यू, बंशीधर ज्यू अपनी सीट में खेलते रहें हमारी यही कामना है। मन चंगा तो कसौटी में गंगा।

दाज्यू, जो हो रहा है होने दो। गाड़ गधेरे सब जगह होर्डिंग-बैनर लागने का रिवाज चल पड़ा है बल। दुनियादारी के सामने हब्बड़-तब्बड़ दिखाने का फरक पड़ने वाला ठैरा। वह बात अलग है कारगुजारी अपनी जगह होती है। रुद्रपुर के ट्रांजिट कैम्प थाना इलाके में विजिलेंस और विद्युत विभाग की संयुक्त टीम ने छापामारी करते हुए भाजपा मण्डल अध्यक्ष सहित नौ उपभोक्ताओं को बजली चोरी में पकड़ कर मुकदमा दर्ज हो गया। दाज्यू, गजब ही हो रहा है हो। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद महेन्द्र भट्ट कह रहे हैं- 'कांग्रेस के नेता राजनैतिक कालनेमि हैं, जो देवभूमि में रह कर सनातनी कार्य का विरोध करते हैं।' दूसरी ओर कांग्रेस की वरिष्ठ नेता गरिमा दसौनी भाजपा को साम्प्रदायिक शोर की पार्टी बताते हुए गरज रही हैं।

कौतिक ही कौतिक ठैरे चारों ओर। दिल्ली के रोहिणी में भी कौतिक ठहरा दिया गया। सीएम धामी ज्यू ने इन्फ्लुएंसर सौरभ को 'उत्तराखण्ड के सितारे' सम्मान से नवाजा बल। दाज्यू, गोगड़ा निकालते रहो.....मान मिले न मिले सम्मान की बहादुरी मिलने ही वाली ठैरी। रुद्रपुर और किच्छा में घमाघम हो रही है। भाजपा के पूर्व विधायक राजेश शुक्ला कह रहे हैं- 'मेरी राजनीति खत्म करने की साजिश हो रही है।' वर्तमान में कांग्रेस विधयायक तिलकराज बेहड़ की लटर-पटर भी चल रही है। गदरपुर वाले विधायक अरविन्द पाण्डे का मिलन समारोह अलग ही चल रहा है। दाज्यू, हरी सब्जी और इच्छाएं हरी अच्छी लगने वाली ठैरी।

नैनीताल में तो गजब ही होने लगा है। फ्लैट मैदान में क्रिकेट प्रतियोगिता को लेकर हंगामे के बाद प्रशासन और खेल विभाग में सहमति बनी। पालिका अध्यक्ष सरस्वती खेतवाल ने खेल विभाग के आयोजन की खिलाफत की फिर सब लोग आपस में मान गये और उद्घाटन हुआ। दाज्यू, और ही और होने लगी है पढ़े-लिखे लोगों के इस शहर में। एक तो सारे ठुल सैप यहीं हैं। शीतकालीन आयोजन में भी हंगामा मचा। पता नहीं ऐसा जो क्यों हो रहा होगा। जब सिस्टम में पालिकाध्यक्ष शहर की मुखिया है तो उनको तो सम्मान देना ही होगा। सब अपनी गुनगुन कर रहे हैं बल। दाज्यू, कैग की जाँच में पता चला है कि 1377 पूर्व कर्मचारी दोहरी पेंशन का लाभ उठा रहे हैं। इनको सरकारी पेंशन के साथ ही सामाजिक सुरक्षा पेंशन भी है बल। दाज्यू, दाल-रोटी का जुगाड़ ही ठैरा।

-तुम्हारा भुला झकरुवा

नई पीढ़ी के साथ.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

हुए। चन्द्र सिंह मर्तोलिया की अगली पीढ़ी में मोहन सिंह, रतन सिंह, चैती देवी हुए। इसी प्रकार प्रताप सिंह मर्तोलिया की अगली पीढ़ी में दुर्गा सिंह, गोकर्ण सिंह, प्रहलाद सिंह, ललित सिंह, उमा देवी, लीला देवी।

डॉ. प्रहलात सिंह का जन्म मर्तोली में 1951 में हुआ। अपने बचपन के उन दिनों की याद को बताते हुए मर्तोलिया जी कहते हैं- माइग्रेशन में जाने वाले परिवारों में उन्हें भी अवसर मिला। बला से रातापानी, पातलथोर, जिमीघाट, रूपसी बगड़, बोगड्यार, जोलपानी होते मर्तोली पहुँचते थे। वापसी में भी इन पड़ावों से होते हुए बला पहुँचते। संसाधन सीमित थे लेकिन व्यवस्थाएं पुख्ता थीं। माइग्रेशन में बच्चों की पढ़ाई के लिये स्कूल व्यवस्था भी उसी प्रकार होती थी और शिक्षक भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर मेहनत करते थे। प्रहलाद सिंह जी बताते हैं कि बचपन की पढ़ाई बला में करने के बाद मुनस्यारी जीआईसी से इण्टर किया। बड़े भाई सुरिंग में रहकर मुनस्यारी से पढ़ाई कर रहे थे उन्हीं के साथ यह अवसर मिला। इसके बाद अल्मोड़ा से बीएससी किया। छात्रावास में रहते हुए जब पढ़ाई जारी थी अन्तिम वर्ष में सीपीएम टी का फार्म भरा। तब तक अल्मोड़ा से नीचे की ओर नहीं आए थे, फार्म में लखनऊ का सेन्टर भरा था और पहली बार काठगोदाम में ट्रेन को देखा था। केजीएमसी लखनऊ में प्रवेश मिलने पर चिकित्सा क्षेत्र में जाने की लगन बढ़ती जा रहा थी और पास होकर कहीं नौकरी का इन्तजार था लेकिन सन् 1977 के दौरान सरकार ने दो साल तक नियुक्तियां नहीं की। ऐसे में इन्तजार कर रहे युवाओं ने सीधे भर्ती का मोह छोड़ अन्य रास्ते देखे। तब प्रहलाद सिंह जी भी यूपीएससी के माध्यम से रेलवे की दुनिया में चले गये। सन् 1979 में पहले पोस्टिंग लालकुआ हुई। इसके बाद काशीपुर, इज्जतनगर बरेली, प्रमोशन पर बिहार के समस्तिपुर में रहे। सन् 2011 में सेवानिवृत्त होकर जोहार नगर हल्द्वानी में है।

जिन्दगी की इस परिक्रमा में डाक्टर मर्तोलिया को वह मीठे पल हमेशा याद रहते हैं जब तिब्बत व्यापार के दौरान घर के सयाने जाते थे, उनके लिये पकवान बनाए जाते और साज-सामान के साथ छोड़ने के लिये सब मिलकर जाते। क्योंकि वह यात्राएं इतनी कठिन थी कि तिब्बत जाने वाले लौटकर भी आएंगे यह कहना कठिन था। इसलिये उनकी कुशल की कामना करते हुए विदा करते थे। गिलम धार में विदाई का दृश्य बहुत मार्मिक होता था जब मिरासी अपनी धुन छेड़ते।

जीवन के उत्तरार्द्ध में डॉ.मर्तोलिया अपनी पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के साथ जिस तरह सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं वह प्रेरित करने वाला है।

अल्मोड़ा मैग्नेसाइट फैक्ट्री संचालन हो

बागेश्वर। अल्मोड़ा मैग्नेसाइट लिमिटेड के श्रमिकों ने एक बार फिर फैक्ट्री खाले जाने और उनका पुराना मानदेय का भुगतान किए जाने को लेकर जिला अधिकारी से गुहार लगाई। श्रमिकों का कहना है कि जिलाधिकारी के निर्देशों के बाद कम्पनी ने उन्हें भुगतान करने का आश्वासन दिया था लेकिन आज तक भुगतान नहीं किया गया है। श्रमिकों ने अपनी समस्याओं का समाधान शीघ्रता से करने की मांग करते हुए कहा कि खदान का संचालन शुरू किया जाए। ज्ञापन में बताया गया कि दिसम्बर 2025 में जिलाधिकारी कार्यालय में हुई बैठक में कम्पनी प्रबन्धन ने एक महीने के भीतर खदान खोलने और प्रत्येक माह की 15 तारीख को वेतन भुगतान का लिखित आश्वासन दिया था। हालांकि, अब तक न तो खदान खाला गया है और न ही श्रमिकों को वेतन मिला है, जिससे कर्मचारियों में असन्तोष का माहौल बन गया है। श्रमिकों ने जिलाधिकारी से शीघ्र कार्रवाई की अपील की है ताकि उनकी समस्याओं का समाधान हो से और उन्हें समय पर वेतन मिल सके। बताते चलें कि अल्मोड़ा मैग्नेसाइट लिमिटेड स्थानीय रोजगार की दृष्टि से महत्वपूर्ण उद्योग है

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आपके पत्र धैर्यता और निष्पक्षताके साथ यात्रा

परम श्रद्धेय सम्पादक जी सादर प्रणाम। आज मुझे बहुत खुशी का एहसास हो रहा है कि कुमाऊँ क्षेत्र की पहली साप्ताहिक पत्रिका 'पिघलता हिमालय' अपनी 48वें वर्ष की पत्रकारिता के सफर को बहुत धैर्यता और निष्पक्षता के साथ पूर्ण करते हुए 49वें वर्ष में प्रवेश कर गया है, जिसकी आपको तथा सम्पूर्ण पिघलता हिमालय परिवार के सदस्यों को बधाई देते हुए शुभकामनायें देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि पत्रिका की उज्ज्वलता के लिए इसकी मनोकामना पूर्ण हो और निकट भविष्य में पिघलता हिमालय पत्रिका को खूब सम्मान मिले।

आज के परिपेक्ष को देखते हुए एहसास करता हूँ कि स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती जी तथा स्व. दुर्गा सिंह मर्तोलिया जी ने पत्रिका का नाम 'पिघलता हिमालय' रखने का उद्देश्य क्या रहा होगा। शयद दोनों बुजुर्गों को एहसास हो गया होगा कि अगर सीमान्तवासी पर्यावरण के प्रति तथा अपनी संस्कृति को संजोये रखने की कोशिश नहीं करेंगे तो एक दिन इसका खामियाजा सभी सीमान्त वासियों को भुगतना पड़ेगा। आज हमारे इन दोनों बुजुर्गो की सोच सच होते नजर आ रही है। हिमालय की चोटियों से अधिकाँश बर्फ पिघल गये है और काला पड़ गया है तथा जलवायु परिवर्तन भी हो गया है। मार्च-अप्रेल महीने में खिलने वाले बुराँश के फूल अब दिसम्बर में खिलते दिखाई देता है। खेत खलिहान बँजर हो गये है। गाँव के मकान खण्डहर में तब्दील हो रहे है तथा गाँव की गलियाँ वीरान से हो गये है। आज इन सबके दोषी हम लोग ही है क्योंकि हम लोगों ने इसकी अनदेखी किया है, जबकि हमें 'पिघलता हिमालय' पत्रिका रोजाना आईने के रूप में लिखित रूप से दिखाते एवँ पढ़ाते रहा, जिसे आज तक जारी रखा है। इस चेतावनी के लिए हम सदा 'पिघलता हिमालय' के बहुत आभारी रहेंगे।

जब भी में पिघलता हिमालय पत्रिका देखता पढता हूँ तो मुझे जनवरी 1979 के वो अनमोल दिनों की याद आ जाती है, जब मैंने पहली बार देखा तब मैं सीमान्त छात्रवास पिथौरागढ़ में रहता था और तब के मेरे मित्र श्री मनोज जँगपागी जी पिघलता हिमालय पत्रिका को लोगों तक पहुँचाते थे और लोग बहुत गर्व के साथ पत्रिका को पढ़ते थे तथा सम्पादकीय की भूरी-भूरी प्रशन्सा करते थे। उन्हीं दिनों को याद करते हुए मैं अपनी भावना को कविता के रूप में आपको समल्पत कर रहा हूँ-

जब भी पिघलता हिमालय पत्रिका देखते,
होंठों में एक मीठी मुस्कान उभर कर आते।
जनवरी सन् उन्नासी की, तस्वीर उभर जाते,
तब मनोज जँगपागी जी, पत्रिका को बाँटते।
जब हम पिघलता हिमालय पत्रिका पढ़ लेते,
सीमान्त होस्टल में, इस पर खूब चर्चा करते।
शयद यह सीमान्त की,पहली पत्रिका होते,
जो क्षेत्र समस्या, संस्कृति व कला को दर्शाते।
नमन करूं स्वं दुर्गा सिंह मर्तोलिया जी को,
नमन है स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती जी को।
सम्पादकीय ऐसे लिखते, उभार देते तथ्यों को,
जिनकी निराली लेखनी ने, जीत गये दिलों को।
आज की दुर्दान्त दशा, उनकी सोच दिखा रही,
पहाड़ों को देखें, पिघलता हिमालय दिख रही।
रोजगार रही नहीं, शिक्षा-उपचार मिल न रही,
गाँव खलिहान बँजर है, लोग पलायन हो रही।
काश पिघलता हिमालय की, आवाज सुनते,
आज पहाड़ की ऐसी, दुर्दशा कोई नहीं देखते।
अब भी कुछ करने की,सोचो समय के रहते,
वर्ना वे दिन दूर नहीं,जब सँस्कृति रहोगे ढूँढ़ते।

-पुष्कर सिंह पंचपाल
साउथ एक्सटेसन
नई दिल्ली

ज्योतिष की बातें- 268

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह मंगल उच्चराशि मकर में, शुक्र मित्रराशि कुम्भ में, बुध व शनि समराशि कुम्भ व मीन में, सूर्य व गुरु शत्रुराशि कुम्भ व मिथुन में गोचर करते रहेंगे तथा चन्द्रमा इस सप्ताह मकर, कुम्भ, मीन व मेष राशि में क्रमशः गोचर करेगा।

बसन्त ऋतु प्रारम्भ- 18 फरवरी 2026 को सूर्य सायनमान से मीन राशि में प्रवेश करेगा अतः प्रकृति में बसन्त ऋतु का आभास होगा। जो लोग वर्षभर त्रिफला अथवा हरड़ का चूर्ण सेवन करते हैं उन्हें अगले दो माह चूर्ण को शहद के साथ सेवन करना चाहिए।

इस स्थाई स्तम्भ में जो ग्रहों का गोचरफल प्रस्तुत किया जाता है वह मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका नामक ग्रन्थ के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। यह गोचरफल नितान्त स्थूल होता है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली महादशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 157

ध्यान का व्यापार

आजकल मेडिटेशन अर्थात् ध्यान का मार्केट उछाल पर है। मेडिटेशन की डिमाण्ड भी बहुत बढ़ गई है। कुछ बाबा, सन्त, तथाकथित योगाचार्य ध्यान की विभिन्न तकनीकों को सिखाते हैं। उनके अनुसार मेडिटेशन से सभी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं, मन को शान्ति मिलती है। कहीं-कहीं मेडिटेशन निशुल्क सिखाया जाता है तो कहीं-कहीं इसकी फीस बहुत अधिक भी होती है। भारत से अधिक डिमाण्ड तो इसकी विदेशों में है। भारत में बहुत से सम्प्रदाय भी, जो गैर सनातनी हैं, ध्यान को अलग-अलग प्रकार से सिखाते हैं। कुछ तो एक बिन्दु पर ध्यान करने को कहते हैं, कुछ लोग दीपक की लौ पर ध्यान करने को कहते हैं, कुछ लोग कुछ निश्चित विचारों पर ध्यान करने को कहते हैं कुछ लोग किसी विशेष चित्र पर ध्यान करने को कहते हैं तो कुछ सम्प्रदाय अपने गुरु के चित्र पर ही ध्यान केन्द्रित करने को कहते हैं। इन सभी गैर सनातनी सम्प्रदायों का लक्ष्य एक ही होता है कि आम जनता को भगवान से दूरकर अन्ततोगत्वा अपने गुरु पर ही ध्यान कराया जाए और अपने गुरु के शिष्यों की संख्या बढ़ाई जाए।

सनातन धर्म में योग के आठ अंगों में पांचवा अंग ध्यान कहा गया है। पुराणों में भी भगवान के विभिन्न विग्रहों के ध्यान मन्त्र का वर्णन आता है। जैसे- भगवान विष्णु का ध्यान 'शान्ताकारं भुजगशयनम् ...', भगवान राम का ध्यान 'ध्यायेदाजानुबाहुम् ...', गणेश जी का ध्यान 'गजाननं भूतगणादिसेवितम् ...', आदि आदि। पुराणों में भगवान के सभी अवतारों के पूजा करते समय के ध्यानमन्त्र दिए गए हैं। गीता में भी ध्यान के लिए शब्द आया है- 'तैलधारवत्'। कुल मिलाकर तथ्य यही है भगवान के विग्रहों पर एकाग्रचित्त से मन लगाना ही ध्यान है । इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से जो लोग ध्यान करना बताते हैं उनसे दूर ही रहना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

कश्मीर से भी.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

जोड़ती है। या तो उन्होंने वहाँ तप किया होगा जैसा कि पद्मपुराण और स्कन्दपुराण कहता है या फिर उनका वहाँ आश्रम होगा।

तो दो बातें हो गईं। एक, पिप्पलाद के पिता का नाम दधीचि था और दो, पिप्पलाद की कर्मस्थली का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में नर्मदा नदी से था। इसके आलावा उनके बारे में दो सूचनाएँ और भी हैं। एक कि पिप्पलाद की माँ का नाम सुवर्चा था जो दधीचि की बाकायदा पत्नी थी या दासी, इस पर मतभेद है। पर आमतौर पर पुराणों में सुवर्चा को दधीचि की दासी कहा गया है और दासीपुत्र होने के कारण उनकी सामाजिक स्थिति महिदास ऐतरेय की तरह शूद्र जैसी हो गई हो तो हैरानी नहीं। पर वैसा होने के बावजूद मान्यता मिली थी जो फिर से इस बात का प्रतीक है कि महाभारत के हजार-बारह सौ वर्ष बाद तक देश में शूद्रों की हालत वह नहीं थी जो बाद में हमारी सामाजिक नासमझियों द्वारा बन गई थी। दूसरी सूचना यह है कि पिप्पलाद का विवाह किसी अनरण्य नामक राजा की लड़की पद्मा से हुआ था। खैर।

इस तमाम सूचना-तन्त्र के सहारे दो बातें बड़ी ही तसल्ली से कही जा सकती हैं। लगता है कि पिप्पलाद शूद्र ही थे जिन्हें विद्या प्राप्ति के लिए काफी तप नर्मदा के किनारे करना पड़ा था। दधीचि ब्राह्मण थे, ऐसा कोई प्रमाण भी नहीं है। चूँकि उनका सम्बन्ध घनघोर तपस्या से है और तपस्या कर्म हमारे इतिहास में ब्राह्मणों के बजाए दूसरे वर्णों से ज्यादा जुड़ा है इसलिए दधीचि ब्राह्मण-इतर ही माने जा सकते हैं। दूसरी बात यह कि पिप्पलाद ने विद्या के क्षेत्र में भरपूर योगदान किया था।

सवाल है, क्या था वह योगदान? पिप्पलाद के नाम से दो महत्वपूर्ण योगदान इस देश में सुरक्षित हैं। वेदों के बारे में जब हम बातें कर रहे थे तो एक बात यह सामने आई थी कि महाभारत के बाद वेदव्यास के शिष्यों की एक लम्बी परम्परा ने भारत में विभिन्न जगहों पर वेदों के स्वाध्याय के केन्द्र खोले थे और उन केन्द्रों में स्थानीय उच्चारणों और जरूरतों के हिसाब से उस वेद का एक स्थानीय रूप जैसा तैयार हो गया था। संस्कृत साहित्य की परम्परागत शैली में हम इन्हें उन वेदों की शाखाएँ कहते हैं। पिप्पलाद ने अथर्ववेद की ऐसी ही शाखा की स्थापना की थी जिसे पैप्पलाद शाखा कहा जाता है। अथर्ववेद की ऐसी दो शाखाएँ आज मिलती हैं। दूसरी का नाम है शौनक शाखा। बाकी पाँच शाखाएँ और भी थीं, जो अब शायद पूरी तौर पर नष्ट हो गई हैं। अथर्ववेद की शौनक शाखा ही अब मुख्यरूप से चलती हैं। पैप्पलाद शाखा की एक हस्तलिखित प्रति तत्कालीन कश्मीर नरेश ने जर्मन विद्वान रॉथ को सन् 1875 में उपहार में भेज दी थी जो बाद में 1901 में अमेरिका से तीन बड़ी जिल्दों में छपी थी। इसके आधार पर निष्कर्ष यह निकाला गया है कि पिप्पलाद ने अथर्ववेद के स्वाध्याय के लिए कश्मीर में जाकर उसकी एक शाखा की स्थापना की होगी। इसलिए स्वाभाविक है कि लगभग नष्टप्राय यह शाखा कश्मीर में उपलब्ध हुई और उसकी हस्तलिखित प्रति वहाँ की पिपि में लिखी मिली जिसका एक ही अर्थ है कि कश्मीर में पैप्पलाद अथर्ववेद की हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करने की परम्परा साढ़े तीन हजार साल से ज्यादा समय तक चलती रही थी। जरा ध्यान दीजिए, कैसे हमारे पूर्वजों ने मेहनत से अपने देश के प्राचीन साहित्य को बनाए और बचाए रखा।

तो अथर्ववेद की पिप्पलाद शाखा का कश्मीर में मिलना पिप्पलाद का रिश्ता यानी मध्यभारत के अलावा कश्मीर से भी जोड़ देता है। कैसे जुड़ा यह रिश्ता? क्यों वे मध्यभारत से कश्मीर गए, इस पर शोध की जरूरत है। इन्हीं महामुनि पिप्पलाद का दूसरा योगदान प्रश्नोपनिषद में सुरक्षित है जिसका विस्तृत विवेचन हम प्रश्नोपनिषद पर लिखते वक्त करेंगे। योगदान यह है कि पिप्पलाद के आश्रम में एक बार कई मुनि इकट्ठा हुए जिनमें छह मुख्य थे- सुकेशा भारद्वाज, शैव्य सत्यकाम, सौर्यायणिगार्ग्य, कौसल्य आश्वलायन, भार्गव वैदर्भी और कबन्धी कात्यायन। नामों से ही लग रहा है कि वे भारत के विभिन्न भागों से आए थे और शायद पिप्पलाद के कश्मीर स्थित आश्रम में आए होंगे क्योंकि तब तक पिप्पलाद की ख्याति काफी प्रतिष्ठित हो चुकी होगी। सभी दर्शन चर्चा के लिए आए थे। उनके पास अपने अपने प्रश्न थे, दार्शनिका सुकेशा के भी कुछ प्रश्न थे और शायद सभी मुनि सुकेशा के ही नेतृत्व में आए। पिप्पलाद के आश्रम में साल भर वे ठहरे। जब पिप्पलाद को विश्वास हो गया कि वे वास्तविक जिज्ञासु हैं तो उन्होंने उनके प्रश्न सुने और उत्तर दिए। सारा सम्वाद प्रश्नोपनिषद में सुरक्षित है। उसके लिए प्रतीक्षा कीजिए।

(साभार नवभारत टाइम्स)

रीना कौशल धर्मशक्तू ने किया सम्वाद

पिथौरागढ़। अंटार्कटिका के तट से साउथ पोल तक 900 किमी की साहसिक स्कीइंग यात्रा करने वाली भारत की प्रथम महिला रीना कौशल धर्मशक्तू ने मानस कॉलेज में छात्र छात्राओं के साथ सम्वाद किया। उन्होंने अपनी साहसिक यात्रा सफर के अनुभव साझा करते हुए जीवन में हर चुनौती का डटकर सामना करने की प्रेरणा दी। कहा कि चुनौतियों का सामना करने वाला सफलता प्राप्त करता है। इससे पहले उनके कालेज पहुँचने पर जोरदार स्वागत किया गया।

जाम से बेहाल है हल्द्वानी शहर

हल्द्वानी। शहर की सड़कों का चौड़ीकरण, चौराहों का सुन्दरीकरण और अतिक्रमण हटाने के तूफानी प्रचार और थोड़ा बहुत अभियान के बावजूद शहर जाम से बेहाल होता जा रहा है। शहर के सभी चौराहों में पुलिस व्यवस्था होने के बाद भी यातायात पटरी पर नहीं है। इसका मुख्य कारण वाहनों की बेतहाशा भीड़ और सड़कों का कई जगह सकरा होना है। कालाढूंगी मार्ग में सर्वाधिक जाम दिखाई दे रहा है। स्टेडियम वाली रोड, नवाबी रोड चौराहा, मुखानी चौराहा, लालडांट चौराहा सहित आन्तरिक मार्गों में भी जाम से लोगों को असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। मुखानी नहर कवरिंग रोड से लेकर रामपुर रोड, नैनीताल रोड, बरेली रोड में होने वाले जाम से यात्री परेशान हो रहे हैं। मुख्य बाजार में तो अतिसमण हटाने के बाद भी फिर से वही हाल है।

कालाढूंगी सीट पर भाजपा में घमासान

कालाढूंगी विधानसभा में चुनाव 2027 के लिये अभी से घमासान मच चुकी है। विधायक बंशधर भगत, उनके पुत्र विकास भगत, मेयर गजराज बिष्ट, सुरेश भट्ट, मोहन पाठक, महेश शर्मा के नाम पर चर्चाएं हो रही हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

खीनापानी, सुयालबाड़ी के दिन संवरेंगे

लला जसुली की धर्मशाला बनेगी पर्यटन का केन्द्र

निजी हाथों में कमान सौंपने के पीछे मकसद है सुरक्षा के साथ आर्थिक विस्तार भी हो सके

नैनीताल। दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी की भवाली-अल्मोड़ा हाईवे पर बनी धर्मशाला जीर्णोद्धार के बाद नए रूप में पर्यटकों के भ्रमण के लिये तैयारी में है। जिसके लिये इसे निजी हाथों में कमान दी जानी है। निजी हाथों में कमान सौंपने के पीछे मकसद इसकी सुरक्षा और आर्थिक विस्तार का है। लला जसुली की धर्मशाला पर इन तैयारियों के साथ पर्यटन का केन्द्र विकसित होगा और खानापानी सुयालबाड़ी के दिन संवरेंगे।

नेशनल हाईवे पर स्थित धर्मशाला में रेस्टोरेंट और कैफे का संचालन निजी हाथों में देने की तैयारी है। असल में नैनीताल के जिलाधिकारी रहे धीराज गर्ब्याल के समय लला जसुली की इस धरोहर का जीर्णोद्धार किया गया और 196.37 लाख रुपये की लागत के इस कार्य में रेस्टोरेंट व कैफे भी बनया गया है। बताया जा रहा है कि सौन्दर्यीकरण के बाद निखार में आए धर्मशाला को ओपन रेस्टोरेंट व कैफे होने से पर्यटकों का आकर्षण बढ़ेगा। इसके संचालन के लिये निविदा आमंत्रित की जा चुकी है। पर्यटन विभाग इसपर निगरानी रखे हुए है।

उल्लेखनीय है कि धर्मशाला के जीर्णक्षीर्ण होने पर लला जसुली के बंशजों सहित जसुली लला स्मृति मंच लगातार आवाज उठाती रही है। तत्कालीन

कमिश्नर ह्यांकी जी ने इसमें रुचि ली। साथ ही डीएम गर्ब्याल जी ने इसके उद्धार के लिये कदम उठाए। धर्मशलाा की भव्यता के बाद जसुली लला स्मृति मंच ने अपना पहला वार्षिकोत्सव इस स्थान पर मनाया और लला जसुली को याद किया। आयोजन में जसुली के बंशजों, उनके जानने वालों, अपनी संस्कृति व धरोहरों को बचाने में विश्वास रखने वालों ने भागीदारी की और संकल्प दोहराया कि इस प्रकार की सभी धरोहरों को सुरक्षित रखने के अभियान में जुटेंगे। इस बीच शासन-प्रशासन ने जगह-जगह कार्य भी करवाए हैं जिस क्रम में सतगढ़ की धर्मशाला का उद्धार हो चुका है। कई ज्ञात अज्ञात धर्मशालाओं की ढूंढ, उनके जीर्णोद्धार, उनपर हुए कब्जे हटाने के लिये बराबर प्रयास किया जा जा रहा है।

माना जा रहा है कि भवाली-अल्मोड़ा हाईवे की इस धर्मशाला पर चहल-पहल बढ़ने का व्यापक असर होगा। पर्यटकों, शोधार्थियों के साथ दर्शकों के लिये यह नया अध्याय होगा। स्थानीय लोगों को रोजगार से जुड़ने का खासा अवसर इससे मिलेगा। पुराने यात्रा पथ, पुराने धर्मशाला के साथ पहाड़ के रीति रिवाज, व्यंजन इत्यादि से जुड़कर हर प्रकार से विस्तार देखने को मिलेगा। खीनापानी सुयालबाड़ी के लोगों ने इस धर्मशाला के जीर्णोद्धार और स्मृति मंच के उत्सव का स्वागत करते हुए हर प्रकार से इसमें जुटने की बात कही थी और इसके लिये हुए निर्णय के बाद वह और भी उत्साहित हैं ताकि स्थानीय स्तर पर पर्यटक गतिविधियां बढ़ने के साथ ही युवाओं को रोजगार मिल सके।

पेरीफेरल रिंग रोड सर्वे होगा, बजट जारी

हल्द्वानी। लामाचौड़ से रामपुर रोड स्थित बेलबाबा तक पेरीफरल रिंग रोड को लेकर प्रस्तावित सर्वे होना है। क्योंकि ग्रामीणों की मांग थी कि पेरीफेरल रिंग रोड से उनकी कृषि भूमि व निजी भवन जद में न आएं। क्षेत्रवासियों ने विधायक बंशीधर भगत से मामले को लेकर भेंट की तो विधायक ने प्रस्तावित रोड का निरीक्षण करने के बाद शासन में रिंग रोड का फिर से सर्वे कराने की मांग की थी। जिस कारण अब दोबारा से यह सर्वे होने जा रहा हे। इस नये सर्वे में स्टेट हाईवे-41 कालाढूंगी-भाखड़ा पुल से शुरू होकर जंगल की फायर लाइन से होते हुए वन क्षेत्र के किनारे-किनारे बेलबाबा के समीप स्टेट हाईवे-5 रामपुर रोड पर मिलेगा। इस प्रस्तावित रोड की कुल लम्बाई 18.674 किमी तय की है। इससे कृषि भूमि के साथ ही निजी सम्पत्तियों को भी सुरक्षा होगी। इस नये सर्वे के लिये बजट भी जारी हो चुका है। क्षेत्रवासियों ने विधायक का आभार जताया।

परिक्रमा

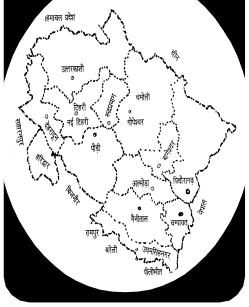

प्रशासन ने विवादित भूमि खाली कराई

खटीमा। भारत-नेपाल सीमा से लगे ग्राम बगुलिया और खाली महुवट में पुलिस प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 101 एकड़ विवादित भूमि से कब्जा हटाया। एसडीएम तुषार सैनी की उपस्थिति में भारी पुलिस बल ने करीब 22 ट्रैक्टरों की मदद से खेतों में खड़ी गन्ना, गेहूं, लाही और मटर की फसलों को रौंद दिया। इस भूमि पर लम्बे समय से विवाद चल रहा था। दूसरी ओर कब्जेदार पीड़ित पक्ष का कहना है मामला न्यायालय में विचाराधीन है।

आवासीय योजनाओं में गुणवत्ता के निर्देश

देहरादून। उत्तराखण्ड में सुनियोजित शहरी विकास, पारदर्शी आवास व्यवस्था और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की दिशा में लगातार ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। शासन स्तर पर विकास प्राधिकरणों की नियमित समीक्षा की जा रही है, ताकि योजनाओं का लाभ आम जन तक समयबद्ध पहुँच। सचिव आवास विकास डॉ.आर.राजेश कुमार ने रुड़की में प्राधिकारण की समीक्षा बैठक की।

पूर्णागिरी मेले की तैयारी, ठेके आवंटित

टनकपुर। उत्तर भारत के सुप्रसिद्ध माँ पूर्णागिरी मेले की तैयारी जोरों पर है। 27 फरवरी से होने वाले मेले के लिये जिला पंचायत चम्पावत द्वारा ई-टेंडरिंग प्रक्रिया के माध्यम से बाल मुण्डन, विद्युत व्यवस्था एवं टिनशेड निर्माण के ठेके आवंटित कर दिए गए हैं। विद्युत व्यवस्था और टिनशेड की निविदाएं हरिद्वार की कम्पनियों के नाम रही हैं। वहीं बाल मुण्डन का ठेका 1 करोड़ 32 लाख रुपये में टनकपुर निवासी जितेन्द्र सिंह महर के नाम छूटा। जिला पंचायत के प्रशासनिक अधिकारी विजय उप्रेती ने बताया कि तीनों निविदाओं को अन्तिम रूप दे दिया गया है और इन्हें स्वीकृति के लिये जिला पंचायत अध्यक्ष के पास भेजा जाएगा। ककरालीगेट से मुख्य मन्दिर तक विद्युत व्यवस्था की जिम्मेदारी हरिद्वार की नरेन्द्र इलेक्ट्रिक कम्पनी को सौंपी गई है। मेला क्षेत्र में आवास एवं कार्यालयों के लिए बनने वाले टिनशेड की निविदा हरिद्वार की शारदा टैण्ट हाउस को मिली है।

उत्तराखण्ड में पर्वतारोहण को नई उड़ान

83 प्रमुख हिमालयी चोटियां पर्वतारोहियों के लिए खुलीं

उत्तराखण्ड ने साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए पर्वतारोहण को नई ऊँचाईयों पर पहुँचाने की दिशा में बड़ा फैसला किया है। सीएम पुष्कर धामी के निर्देश पर उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद ने वन विभाग के समन्वय से गढ़वाल और कुमाऊँ हिमलाय क्षेत्र की 83 प्रमुख पर्वत चोटियों को पर्वतारोहण अभियानों के लिए पूरी तरह खोल दिया है। यह निर्णय उत्तराखण्ड को वैश्विक पर्वतारोहण मानचित्र पर एक सशक्त और आकर्षक गंतव्य के रूप में स्थापित करेगा। खोली गई चोटियों की ऊँचाई 5700 मीटर से 7756 मीटर तक है, जिनमें कामेट (7756 मीटर), नन्दा देवी ईष्ट, चौखम्बा समूह, त्रिशूल समूह, शिवलिंग, सतोपंथ, चंगाबांग, पंचचूली और नीलकंठ जैसी विश्व प्रसिद्ध और चुनौतिपूर्ण चोटियां शामिल हैं। ये शिखर न केवल तकनीकी कठिनाई और प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध हैं बल्कि हिमालय की भव्यता के जीवन्त प्रतीक भी माने जाते हैं।

मुख्यमंत्री पर्वतारोहण की इस नई उड़ान पर कहते हैं कि हिमालय हमारी पहचान, हमारी विरासत और हमारी शक्ति है। 83 प्रमुख पर्वत चोटियों को पर्वतारोहण के लिए खोलना राज्य के साहसिक पर्यटन को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम है। हमारा उद्देश्य है कि देश के युवा आगे आएं, स्थानीय लोगों को रोजगार मिले और पर्यावरण संरक्षण के साथ सन्तुलित विकास सुनिश्चित हो। राज्य सरकार सुरक्षित, जिम्मेदार और सतत पर्वतारोहण के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य भारतीय युवाओं को पर्वतारोहण के लिए प्रोत्साहित करना, साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देना और सीमावर्ती व दूर-दराज क्षेत्रों की स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करना है। अधिसूचित 83 चोटियों पर अब भारतीय पर्वतरा रोहियों को कोई अभियान शुल्क (पीक फीस, कैम्पिंग फीस, पर्यावरण शुल्क आदि) नहीं देना होगा। पहले यह शुल्क भारतीय पर्वतारोहण संस्थान (आईएमएफ) और वन विभाग द्वारा लिया जाता था लेकिन अब राज्य सरकार इसका वहन करेगी।

देवीधुरा में चिकित्सा सेवा का विस्तार

लोहाघा। माँ बाराही धाम देवीधुरा में प्रस्तावित भव्य मन्दिर के साथ ही अब क्षेत्र की चिकित्सा सेवाओं को भी ऐतिहासिक सौगात मिलने जा रही है। एक शताब्दी बाद देवीधुरा के चिकित्सालय का सूचीकरण कर उसे टाइप-बी अस्पताल का दर्जा दिया गया है, जिससे क्षेत्र में चिकित्सा सेवा का विस्तार होगा। इस उपलब्धि के पीछे पूर्व ग्राम प्रधान एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ईश्वर सिंह बिष्ट के सतत प्रयास अहम साबित हुए हैं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. देवेश चौहान ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि इण्डियन पब्लिक हेल्थ स्टैंडर्ड के मानकों के अनुसार टाइप-बी अस्पताल में मरीजों को 24 घण्टे चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होगी। इसके तहत यहाँ दो चिकित्सक, एक एएनएम, हेल्थ विजिटर, वार्ड बॉय, आशा टीम नर्सिंग स्टाफ के कुल 13 पद स्वीकृत किए गए हैं। आईपी एचएस मानकों के अनुसार अस्पताल के लिए 10 नाली भूमि की आवश्यकता थी, जिसे पूर्व प्रधान ईश्वर सिंह बिष्ट के प्रयायों से ग्रामों द्वारा उपलब्ध कराई गई।

बैजनाथ में बनेगा उप जिला चिकित्सालय

बागेश्वर। सीएम की घोषणा के अनुरूप सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बैजनाथ को उपजिला चिकित्सालय बनाने की कवायद शुरू हो गई है। इसके लिये राज्यमंत्री शिवसिंह बिष्ट, जिला पंचायत सदस्य जर्नादन लोहमी, मुख्य चिकित्साधिकारी डा. कुमार आदित्य ने अन्य के साथ मिलकर प्रस्तावित भूमि परीगाँव देवनाई का निरीक्षण किया।

राहुल गांधी ने दीपक को सराहा

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने उत्तराखण्ड के दीपक को सराहते हुए 'नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान' का प्रतीक बताया। श्री राहुल ने कोटद्वार में कपड़ों की दुकान को 'बाबा' नाम होने पर आपत्ति कर रहे बजरंग दल के कार्यकर्ताओं की कड़ी आलोचना की। कहा देश को दीपक जैसे युवाओं की जरूरत है। बताते चलें कि मुस्लिम की दुकान में बाबा लिखे होने पर बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने हंगामा कर दिया था, जिसके बाद से वह चारों ओर आलोचना झेल रहे हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हिमालय संगीत शोध समिति द्वारा आयोजित सेमिनार

'हिमालय के लोक व्यवहार में कला और विज्ञान'

(सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय सन्दर्भ)

'पिघलता हिमालय' का हमेशा से अभियान रहा है कि अपने सीमान्त के लोकभाव/संस्कृति को दृढ़ता के साथ उजागर करे। इस क्रम में महान दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी की स्मृतियों को संजोने व उनकी धरोहरों को संरक्षित रखने का संकल्प भी लिया है। गत वर्षों की भांति 2026 का यह आयोजन 'हिमालय के लोक व्यवहार में कला और विज्ञान' विषय पर केन्द्रित है जो हिमालय के निडर पत्रकार-कथाकार स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती की स्मृतियों के साथ लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी के ऐतिहासिक पदचिन्हों की बात करेगा।

वरिष्ठ कथाकार-पत्रकार स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती 13वां स्मृति समारोह

दिनांक- 22 फरवरी 2026 रविवार
स्थान- सिंथिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल
सिंथिया लेन, जज फार्म, मुखानी हल्द्वानी
उद्घाटन- प्रातः 11 बजे
मुख्य अतिथि- पद्मश्री डाक्टर जीवन सिंह तितियाल
विशिष्ट अतिथि- श्रीमान करन सिंह नगन्याल, आईजी गढ़वाल रेंज
विशिष्ट अतिथि- श्रीमान नवीन चन्द्र वर्मा, राज्य मंत्री उत्तराखण्ड सरकार एवं केन्द्रीय प्रमुख उद्योग व्यापार प्रतिनधि मण्डल
विशिष्ट अतिथि- श्रीमान अशोक सिंह गर्ब्याल, सेनि.सहा. कमिश्नर

आनन्दश्री सम्मान 2026 से सम्मानित होने वाले महानुभाव-

प्रो. दीवान सिंह रावत, कुलपति कुमाऊँ विश्वविद्यालय
डॉ.गोविन्द सिंह तितियाल, प्रभारी मेडिकल कालेज हल्द्वानी-रुद्रपु
श्रीमान करन सिंह नगन्याल, आईजी गढ़वाल रेंज उत्तराखण्ड
डाक्टर महिमन सिंह दुग्ताल, फिजिसियन विशेषज्ञ बेस अस्पताल नैनीताल
श्रीमान घनश्याम ग्वाल, रं कल्याण संस्था बरेली/समाजसेवी
श्रीमान जीवन सिंह सीपाल, रं संस्था केन्द्रीय कार्यकारिणी सांस्कृतिक सचिव
श्रीमान देव सिंह पंचपाल, अल्मोड़ा/धरमघर कृषिविज्ञानी व समाजसेवी
इंजी. नरेन्द्र सिंह पतियाल, मुख्य अभियन्ता उत्तराखण्ड सरकार
श्रीमान पंकज जोशी 'विशेष', श्रीमान ललित मोहन बेलवाल, दीक्षा बिष्ट जी, श्रीमान हर्ष रावत, श्रीमान पवन कुंवर
(पत्रकारिता के सजग प्रहरी)

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न. 8958525979, 9411134775
फोन सम्पर्क- 05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

राजाजी टाइगर रिजर्व में मोबाइल बैन

हरिद्वार। राजाजी टाइगर रिजर्व में जंगल सफारी के दौरान मोबाइल फोन पूरी तरह बैन कर दिया गया है। भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण के निर्देश पर यह आदेश जारी हो चुका है।

इस प्रतिबन्ध का उद्देश्य प्राकृतिक शान्ति बनाए रखने के साथ अनावश्यक मानवीय दखल रोकना और पर्यटकोंकी सुरक्षा सुनिश्चित करना है। सुप्रीम कोर्ट के 17 नवम्बर 2025 को पारित आदेश का उल्लेख करते हुए इस नए नियम को तत्काल प्रभाव से लागू किया जा चुका है। पार्क के निदेशक अमित वर्मा ने बताया कि यह आदेश पर्यटकों व चालकों दोनों के लिए है, और इसका उद्देश्य जंगल की सुरक्षा व शान्ति है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दून पुस्तकालय

जलस्रोतों का सिमटना दून घाटी के लिए चुनौती

खबरपात कार्यक्रम में विकास और देहरादून के सिमरटते जल संसाधनों पर चर्चा

देहरादून। तीव्र विकास प्रक्रिया ने देहरादून के पर्यावरण को किस कदर नुकसान पहुँचाया है इस बात पर गहन चर्चा दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र में खबरपात कार्यक्रम में हुई। मानव गतिविधियों व तीव्र विकास प्रक्रिया से उपजे कारणों से ज्यादा नुकसान यहाँ के जलस्रोतों का हुआ है। दून की धरती का भूमिगत जलस्तर लगातार गिरता जा रहा है और यह भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा है। 'विकास के भेंट चढ़े देहरादून के जलाशय' विषय पर चर्चा पर मुख्य प्रस्तुति जन विज्ञान के विजय भट्ट ने दी। वे पिछले कई सालों से देहरादून के स्थानीय पर्यावरण व पारिस्थितिकी पर जमीनी काम कर रहे हैं। इस कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार सामाजिक कार्यकर्ता त्रिलोचन भट्ट ने किया।

अपने पीपीटी प्रजेंटेशन में विजय भट्ट ने कहा कि देहरादून किसी जमाने में नहरों, जल स्रोतों और जलकुण्डों, छोटी जल धाराओं का शहर था। चारों तरु जंगल होने से यहाँ की आबोहवा स्वास्थ्यप्रद होती थी। गर्मियों में शीतल हवा चलती थी, देशभर के लोग स्वास्थ्य लाभ के लिए गर्मियों में देहरादून आते थे। लेकिन हाल के सालों में आर्थिक लाभ की लालसा व तीव्र विकास ने सब कुछ खत्म जैसा कर दिया है। इस विकास ने देहरादून के जलस्रोतों को एक तरह से लील लिया है। इसका असर भूमिगत जल पर पड़ रहा है और देहरादून जल संकट की समस्या की ओर बढ़ रहा है।

ऐतिहासिक तथ्यों का जिक्र करते हुए विजय भट्ट ने कहा कि नजीबुद्दौला के शासनकाल में दून घाटी में बड़े पैमाने पर कुएं खोदे गये थे और आम के पेड़ लगाये गये थे। अंग्रेजों के दौर में भी कुएं खोदे गये और नहरें बनाई गई। अंग्रेज अधिकारी मिस्टर सोर द्वार बनाया गया एक कुआं कचहरी परिसर में आज भी मौजूद है। उन्होंने कहा कि देहरादून में जहाँ जोहड़ (जलकुण्ड) थे वहाँ अब या तो बड़ी-बड़ी भवन हैं या पार्क बनाये जा रहे हैं। जहाँ नहरें थी वहाँ सड़कों का जाल बिछ गया है। एलीवेटेड रोड व अन्य निर्माणों से प्राकृतिक जंगलों का विनाश हो रहा है। जो कुछ जल संसाधन अब भी बचे हुए हैं, वे भी जंगलों के विनाश से खत्म होने की कगार पर हैं।

उन्होंने याद दिलाया कि दून में कई जगहों के नाम के साथ पानी जुड़ा हुआ है। मसलन नालापानी, भोपाल पानी, झड़ीपानी, खट्टा पानी आदि। यह इस बात का प्रतीक है कि दून एक तरह से पानी की बहुलता वाला शहर था और यही पानी इसकी आबोहवा और भूमिगत जलस्तर को सतत रूप से बनाये रखती थी। पर चिन्ता इस बात की है कि आज यह सब खत्म हो रहा है।

संचालन करते हुए त्रिलोचन भट्ट ने कहा कि सरकारी नीतियां बनाते समय पर्यावरणीय पक्ष को गहनता से देखना बहुत जरूरी बात है। पर्यावरण की अनदेखी होना हम सबके लिए चिन्ताजनक बात है। दून का तापमान साल दर साल बढ़ रहा है। तापमान 43 डिग्री तक पहुँच जाता है। जंगलों की रक्षा के लिए लोग सड़कों पर उतरती है पर आमतौर पर इस तरह के आन्दोलनों के अनदेखी की जाती है। कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने देहरादून के पर्यावरण को लेकर कई सवाल भी पूछे।

इस अवसर पर पर्यावरण विद डॉ. रवि चोपड़ा, हरिओम, देवेन्द्र काण्डपाल, चन्द्रशेखर तिवारी, डॉ. डी. के. पाण्डे, आलोक सरीन, कमलेश के. खन्तवाल, हिमांशु अरोड़ा, डॉ. वी. के डोभाल, सुन्दर बिष्ट आदि मौजूद थे।

कोरी घोषणाओं के खिलाफ गंगोलीहाट में कांग्रेस का प्रदर्शन

गंगोलीहाट। कांग्रेस कमेटी गंगोलीहाट द्वारा अनुसूचित जाति प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज टम्टा के नेतृत्व में तहसील परिसर में धरना प्रदर्शन किया गया। ब्लाक कांग्रेस कमेटी ने सीएम धामी पर कोरी घोषणाओं का आरोप लगाते हुए कहा कि 2024 में जन्माष्टमी के अवसर पर गंगोलीहाट विधानसभ के विकास के लिए कई घोषणा की लेकिन 17 माह बीत जाने के बावजूद सबकुछ कोरा है। जिनमें सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में ब्लड स्टोरेज सेन्टर, जीजीआईसी में भवन निर्माण, स्वास्थ्य केन्द्र गणाईगंगोली का भवन निर्माण, जीआईसी खेल मैदान विस्तारीकरण, राजीव गांधी नवोदय विद्यालय में चाहर दीवारी निर्माण, बोराआगर से लम्केश्वर मन्दिर तक सीसी निर्माण, बोकटा गाँव से खेती गाँव तल्लीसार मोटर मार्ग निर्माण की घोषणाएं शामिल हैं। मनोज टम्टा ने चेतावनी दी कि यदि तीन माह के भीतर सीएम की घोषणाएं पूरी नहीं हुई तो उग्र आन्दोलन किया जाएगा। प्रदर्शनकारियों में हयात सिंह बोरा, चन्दन बाणी, गणेश रावल, मोहन बोरा, राजेन्द्र टम्टा, दीपक धानिक, राकेश कुमार, बलवन्त मेहरा, आदित्य कुमार, अवधेश पथनी, इन्दर सिंह शामिल थे।

महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
चन्द्र सिंह लस्पाल
ग्राम- छड़ायल सुयाल
हिमालयन कलौनी,
पश्चिम मानपुर, हल्द्वानी

भूपाल सिंह मर्तोलिया
गोपाल सदन, लक्ष्मी बिहार
मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

किशन सिंह जंगपांगी
अध्यक्ष श्री स्मारक समिति
मल्ला दुम्मर, मुनस्यारी

मंगल सिंह जंगपांगी
(सरस्वती शिशु मन्दिर के निकट)
मैन बाजार, मुनस्यारी

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)